पत्र सूचना कार्यालय (रक्षाविंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्ली:पौष 09,1944
शुक्रवार: 30 दिसंबर 2022

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने केरल में तीर्थदानम महोत्सव के दौरान कहा कि दुनिया भारत को सैन्य शक्ति के रूप में मान्यता देती है

रक्षा मंत्री ने सैनिक संत अवधारणा का आह्वान किया जो भौतिक सीमाओं के साथ-साथ राष्ट्र के आध्यात्मिक कल्याण को सुरक्षित करती है

भारत इसके लोगों की कड़ी मेहनत और उद्यम के कारण दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है: रक्षा मंत्री

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि दुनिया आज भारत को सैन्य शक्ति के रूप में मान्यता देती है।यह सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' केसमर्थनके कारणहै, जो शिवगिरी मठ के श्री नारायण गुरू के उपदेश'उद्योग के माध्यम से समृद्धि' पर आधारित है। वह 30 दिसंबर 2022 को तीर्थदानम महोत्सव के अवसर पर शिवगिरी मठ, केरल में एकत्रित संतों और विद्वान बुजुर्गों की मण्डली को संबोधित कर रहे थे। श्री राजनाथ सिंह ने कहा, "उद्योग के माध्यम से समृद्धि का उनका उपदेश भारत सरकार के "आत्मनिर्भर भारत" के संकल्प का आधार है। आज भारत अपनी कड़ी मेहनत और उद्यम के कारण दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। आज भारत दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। "यह श्री नारायण गुरु की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने शिवगिरी मठ को शिक्षा, स्वच्छता आदि जैसे विषयों पर आमजन के बीच चेतना फैलाने का आदेश दिया। और गुरुजी की कृपा एवं पूज्य संतों के आशीर्वाद से हमारी सरकार ने भी इन विषयों पर अपना विशेष ध्यान केंद्रित किया है।"

सैनिक संत/सोल्जर सेंट की अवधारणा का आह्वान करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि एक रक्षा मंत्री के रूप में वह सैनिकों की बहादुरी और वीरता के बल पर देश की भौतिक सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं, इसी तरह संत देश की संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। उन्होंने कहा, "अगर हम देश के शरीर की रक्षा कर रहे हैं, तो आप इस देश की आत्मा की रक्षा कर रहे हैं। और एक राष्ट्र अनंत काल तक तभी जीवित रह सकता है जब उसका शरीर और आत्मा दोनों सुरक्षित हों। मैं आपको इसके लिए बधाई देता हूं।"

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भरता भारत की संस्कृति का आंतरिक हिस्सा रहा है। श्री नारायण गुरुजी ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से आत्मनिर्भरता के इस संदेश को आमजन तकपहुंचाया और आज शिवगिरी मठ भी इसे निरंतर आगे बढ़ाने का काम कर रहा

है। गुरुजी न केवल आधुनिकता के पक्षधर थे, बल्कि भारत की प्राचीन संस्कृति और आधुनिकता के बीच संतुलन भी बनाए रखते थे, जो आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि कड़ी मेहनत और उद्यम के माध्यम से भारत के दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने से इसकी पुष्टि हुई है।

महान संतों, दार्शनिकों और कवियों को जन्म देने वाली केरल की पवित्र भूमि को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि इन महान हस्तियों ने न केवल आम आदमी के दिल में उच्च आदर्शों और मूल्यों को समाहित किया, बल्कि पूरे देश को एकजुट किया। उन्होंने बताया कि आचार्य शंकर एक छोटे से गांव कालड़ी में पैदा हुए, पूरे भारत की यात्रा की और पूरे देश को सांस्कृतिक रूप से एक किया। यह अपने आप में अभूतपूर्व था। उन्होंने कहा, "उनके अद्वैतवाद के दर्शन से निकला पूरे विश्व की एकता का सिद्धांत अब भी देश की आत्मा में अंतर्निहित है जो समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट और बराबरी के स्तर पर रहने के लिए प्रेरित करता है। श्री नारायण गुरु जी निस्संदेह सांस्कृतिक एकता को समृद्ध करने की श्रृंखला में एक ऐसा ही नाम हैं।"

भारतीय परंपरा, सोच और दर्शन को समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से सरोकार न रखने वाली बताकर की जाने वाली आलोचना को खारिज करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मानव समानता और बंधुत्व की अवधारणा भारत के प्राचीन साहित्य, परंपरा और चिंतन में प्रचलित रही है। बल्कि यह पश्चिमी की तुलना में अधिक व्यापक और समावेशी है। जबकि पश्चिम केवल मनुष्यों के बीच समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की बात करता है, भारतीय परंपरा, 'वसुधैव कुटुम्बकम' के रूप में अर्थात 'पूरा विश्व एक परिवार है' मनुष्यों और जानवरों, चेतन और गैर-चेतन प्राणियों के बीच और वास्तव में पूरे विश्व और ब्रह्मांड के बीच समानता, बंधुत्व और एकता को देखता है। उन्होंने कहा, 'और यही कारण है कि प्राचीन काल में भारत को विश्वगुरु के रूप में मान्यता दी गई थी।

रक्षा मंत्री ने वेद, उपनिषद, गीता और रामायण के विभिन्न ग्रंथों और सिद्धांतों को उद्धृत करते हुए दुनिया की समानता और एकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सभा को आचार्य शंकर के 'अद्वैतवाद' से अवगत कराया जो सार्वभौमिक समानता का पर्याय है। उन्होंने उल्लेख किया कि श्री नारायण गुरु ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान "शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता" का नारा दिया था। "यह हमारी प्राचीन टिप्पणियों में भी पाया जाता है कि ज्ञान मनुष्य को मुक्त करता है। शिक्षा आत्मज्ञान की ओर ले जाती है, आत्मज्ञान स्वतंत्रता की ओर ले जाता है।

शिवगिरि मठ केरल में तिरुवनंतपुरम जिले के वर्कला शहर में एक प्रसिद्ध पर्यटक तीर्थ स्थान है। मठ का मुख्यालय श्री नारायण धर्म संघाम भी है, जो श्री नारायण गुरु के शिष्यों और अनुयायियों का एक संगठन है। शिवगिरि तीर्थयात्रा, जिसे मलयालम में शिवगिरी तीर्थदानम के रूप में जाना जाता है, मठ में मनाया जाने वाला एक और महत्वपूर्ण त्योहार है।

एबीबी/डीएस